# पाठ – 2
# ल्हासा की ओर

## उत्तर 1

- ❖ थोड्ला के पहले के आखिरी गाँव पहुँचने पर भिखमंगे के वेश में होने के बावजूद लेखक को ठहरने का उचित स्थान मिला क्योंकि उस के साथ मंगोल भिक्षुक सुमति था जिसकी उस क्षेत्र में काफी जान पहचान थी । लोग भिखारी के वेश में भी भगवान के दर्शन करते थे । अतिथि को देवता माना जाता था । लोग सीधे व सरल थे।
- ❖ पाँच साल बाद भद्र (सज्जन) वेश में होने के बावजूद उन्हें उचित सम्मान और स्थान नहीं मिला क्योंकि समय के साथ–साथ लोगों की मनोवृत्ति में

परिवर्तन आ गया था क्योंकि जो लोग पहले महमान को अपने घर के भीतर तक आने की अनुमति दे देते थे, उनके लिए चाय बनने में भी उन्हें कोई परेशानी नहीं होती थी। आज वही लोग स्वयं तथा स्वयं के परिवार को किसी अनिष्ट से बचाने के लिए किसी अपरिचित को घर में घुसने नहीं देते थे।

## उत्तर 2

उस समय तिब्बत में हथियार का कानून न रहने के कारण लोग पिस्तौल व बंदूक लेकर घूमते थे क्योंकि उस क्षेत्र में डाकुओं का वर्चस्व था। द्याह डाकू पहले लोगों को मारते थे फिर लुटत थे। सरकार खुफिया विभाग या पुलिस पर खर्च नहीं करती थी। निर्जन क्षेत्र होने के कारण गवाह भी नहीं मिलते थे। हर समय जान का खतरा बना रहता था।

अतः लोग आत्मरक्षा के लिए अपने पास हथियार रखते थे।

## उत्तर 3

लेखक लडकोर के मार्ग में अपने साथियों से निम्नलिखित कारणों के कारण पिछड़ गए ः

- ❖ लेखक का घोड़ा बहुत धीरे- धीरे चल रहा था। सहृदय लेखक लाचार पशु को मारना नहीं चाहता था।
- ❖ लेखक रास्ते से अनभिज्ञ (अनजान) था। एक स्थान पर दो रास्ते देखकर उसने गलत मार्ग का चयन कर लिया इसी कारण उसे अपने साथियों तक पहुँचने के लिए मील–डेढ़–मील का अतिरिक्त सफ़र तय करना पड़ा।

# उत्तर 4

लेखक ने शेखर में सुमति को उनके यजमानों के पास जाने से रोका क्योंकि—

- ❖ सुमति की उस क्षेत्र में काफी जान–पहचान थी सबको गंडे–ताबीज़ बाँटते–बाँटते वह काफी समय लगा देता। लेखक अपना कीमती समय नष्ट नहीं करना चाहता था इसलिए उसने सुमति को जाने से रोका।
- ❖ इस बार वह सुमति को रोकना नहीं चाहता था क्योंकि वह जिस मंदिर में बैठा था उस मंदिर में बुद्ध वचन अनुवाद की **103** हस्तलिखित पोथियाँ

थी। लेखक स्वयं एक साहित्यकार था। अतः उस साहित्य के रस का आनंद लेने के लिए उसे समय की जरूरत थी। इसलिए इस बार लेखक ने सुमति को नहीं रोका ।

# उत्तर 5

अपनी यात्रा के दौरान लेखक को निम्नलिखित कठिनाइयों का सामना करना पड़ा —

- ❖ सीमा पर जाने की अनुमति न होने के कारण उन्हें छद्म (झूठा) वेश में यात्रा करनी पड़ी।
- ❖ दुर्गम रास्तों पर **16–17** हज़ार फीट की चढ़ाई चढ़नी पड़ी।
- ❖ अपना समान खुद उठाना पड़ा।
- ❖ बदलते मौसम के विरोधाभास (एक दूसरे के विपरीत) को झेलना पड़ा।
- ❖ उपरोक्त परेशानियों के बावजूद लेखक स्वयं को पर्यटन के आनंद से वंचित नहीं करना चाहता था ।

# उत्तर 6

प्रस्तुत पाठ के आधार पर तिब्बती समाज को निम्नलिखित प्रकार से वर्णन किया जा सकता है–

- ❖ तिब्बत का समाज सभ्य समाज था तथा सहृदयता व सहनशीलता से परिपूर्ण था।
- ❖ जाति–पाति छुआ–छूत का कोई भेद–भाव नहीं था।
- ❖ लोग एक दूसरे पर विश्वास करना जानते थे।
- ❖ कृषि प्रधान समाज था।
- ❖ स्त्रियों को स्वतंत्रता प्रिय थी। उन्हें पर्दे की कैद में रहने की आवश्यकता नहीं थी।
- ❖ आतिथ्य प्रेम के स्पष्ट रूप से परिलक्षित (दिखाई देना) था।
- ❖ वहाँ के समाज में भी अंधविश्वास का वर्चस्व (एकाधिकार) था।
- ❖ लोग धर्म—भीरू (धर्म से डरने वाले) थे।

- परस्पर प्रेम और सहृदयता के बंधनों ने लोगों को बांध रखा था।

## उत्तर 8

सुमति के व्यक्तित्व में निम्नलिखित विशेषताएँ थी जो सबको अपनी ओर आकर्षित करती थी ः-

- सुमति एक मिलनसार व्यक्ति था।
- उसके गुण सबको अपनी ओर आकर्षित करते थे।
- सुमति का मृदु व्यवहार सेवा भाव, शालीनता इत्यादि का प्रभाव उसके व्यवसाय पर भी पड़ता था।
- सुमति जिस भी क्षेत्र में जाता अपने यजमानों से मिलना न भूलता था।

- ❖ सबकी सहायता के लिए सदैव तैयार रहता था। दूसरों की परेशानियों को समझता था इसलिए जितनी जल्दी गुस्सा होता था उतनी जल्दी मान भी जाता था।
- ❖ उस की मिलनसारिता उसका स्वभाव उसकी असीमित जान पहचान के कारण थे।

## उत्तर 9

वेशभूषा किसी भी व्यक्ति का परिचय नहीं बन सकती । साधारण वेशभूषा पहनने वाला भी महान हो सकता है। व्यक्ति की पहचान उसके गुणों से होती है,उसके वस्त्रों से नहीं। **सादा जीवन उच्च विचार** रखने वाला व्यक्ति अपने गुणों की सुवासना से अपने आस-पास के परिवेश को प्रभावित करने का सामर्थ्य रखता है। महात्मा गाँधी ,सरदार पटेल ,वल्लभ भाई पटेल,मदर टेरेसा इत्यादि लोगों ने अपने

गुणों से देश को ही नहीं अपितु विश्व को प्रभावित किया है।

## उत्तर 10

तिब्बत पहाड़ी और पठारी भू-भाग है। यहाँ पहुँचना बेहद कठिन है।इसकी सीमा भारत से लगी हुई है।यहाँ की घाटियाँ,ऊँचे-ऊँचे पर्वत ,बीहड़ रास्ते लोगों के साहस को चुनौती देते प्रतीत होते हैं।

तिब्बत की जलवायु भी विचित्र है। जहाँ धूप हो ,वहाँ तेज़ गर्मी और जहाँ छाया हो वहाँ बर्फ की ठंडक महसूस होती है।पहाड़ों पर बर्फ़ ही बर्फ़ दिखाई देती है।रास्ते चढ़ाई वाले हैं।कई रास्तों में खेती होती है।सारी भूमि ज़मींदारों में बँटी हैं।जमींदारी का मुख्य भाग मठों का होता है।ज़मींदार बेगार में मज़दूरों से काम लेते हैं

दिल्ली शहर का अपना कोई मौसम नहीं है।आस-पास के शहरों से प्रभावित होकर यह शहर गर्मियों में

अत्यधिक गर्म व सर्दियों में अत्यंत ठंड़ा रहता है। पहाड़ों व झरनों के आनंद से वंचित शहरी ज़िंदगी की भाग–दौड़ तथा तटस्थ मानसिकता के शिकार दिल्लीवासी स्वयं अपने दायरों में कैद हो चुके हैं।

**उत्तर 12** 'ल्हासा की ओर' पाठ में लेखक राहुल सांस्कृतयायन हैं । प्रस्तुत पुस्तक में साहित्य की अनेक विधाओं का प्रयोग किया गया है। यथा–

| **पाठ का नाम** | **विधा** |
|---|---|
| दो बैलों की कथा | कहानी |
| ल्हासा की ओर | यात्रा-वृतांत |
| उपभोक्तावाद की संस्कृति | लेख व निबंध |
| सांवले सपनों की याद | सस्मरण |
| देवी मैना भस्म कर | रिपोर्ताज |

| | |
|---|---|
| दिया गया | |
| प्रेमचंद के फटे जूते | व्यंग्य |
| मेरे बचपन के दिन | आत्मकथा |
| एक कुत्ता और एक मैना | निबंध |

*यात्रा वृत्तांत,कहानी,व्यंग्य,आदि की तरह कल्पित नहीं होता।

*यात्रा के प्रसंग, पात्र,आदि लेखक के स्वंय के अनुभव होते हैं।

*यात्रावृत्तांत द्वाराहमारा ज्ञानवर्धन होता है।
हमें अज्ञात या अनजान स्थलों  की जानकारी मिलती है।

*भाषा एवं सस्कृति के विषय में जानकारी मिलती है।

**श्रीमती एस.धीर**